

सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ।
 येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥ १ ॥
 न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
 न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥ २ ॥
 कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ।
 अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥ ३ ॥
 गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।
 मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
 पाठमात्रेण संसिद्धयेत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥ ४ ॥

अथ मन्त्रः

ॐ ऐ हीं क्लीं चामुण्डायै विच्छे ॥ ॐ ग्लीं हुं क्लीं जूं सः
 ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
 ऐ हीं क्लीं चामुण्डायै विच्छे ज्वल हुं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥
 ॥ इतिमन्त्रः ॥

शिवजी बोले—

देवी! सुनो। मैं उत्तम कुंजिकास्तोत्रका उपदेश करूँगा, जिस मन्त्रके प्रभावसे देवीका जप (पाठ) सफल होता है ॥ १ ॥

कवच, अर्गला, कीलक, रहस्य, सूक्त, ध्यान, न्यास यहाँतक कि अर्चन भी (आवश्यक) नहीं है ॥ २ ॥

केवल कुंजिकाके पाठसे दुर्गापाठका फल प्राप्त हो जाता है। (यह कुंजिका) अत्यन्त गुप्त और देवोंके लिये भी दुर्लभ है ॥ ३ ॥

हे पार्वती! इसे स्वयोनिकी भाँति प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिये। यह उत्तम कुंजिकास्तोत्र केवल पाठके द्वारा मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन और उच्चाटन आदि (आभिचारिक) उद्देश्योंको सिद्ध करता है ॥ ४ ॥

मन्त्र—ॐ ऐ हीं क्लीं चामुण्डायै विच्छे ॥ ॐ ग्लीं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐ हीं क्लीं चामुण्डायै विच्छे ज्वल हुं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
 नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥ १ ॥

नमस्ते शुभ्महन्त्यै च निशुभ्मासुरधातिनि ॥ २ ॥

जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।
 ऐकारी सृष्टिरूपायै हींकारी प्रतिपालिका ॥ ३ ॥

कलींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।
 चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ॥ ४ ॥

विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥ ५ ॥

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
 क्रां क्रीं कूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥ ६ ॥

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।

(मन्त्रमें आये बीजोंका अर्थ जानना न सम्भव है, न आवश्यक और न वांछनीय। केवल जप पर्याप्त है।)

हे रुद्रस्वरूपिणी! तुम्हें नमस्कार। हे मधु दैत्यको मारनेवाली! तुम्हें नमस्कार है। कैटभविनाशिनीको नमस्कार। महिषासुरको मारनेवाली देवी! तुम्हें नमस्कार है ॥ १ ॥

शुभका हनन करनेवाली और निशुभको मारनेवाली! तुम्हें नमस्कार है ॥ २ ॥

हे महादेवि! मेरे जपको जाग्रत् और सिद्ध करो। 'ऐकार' के रूपमें सृष्टिस्वरूपिणी, 'हीं' के रूपमें सृष्टिपालन करनेवाली ॥ ३ ॥ 'कलीं' के रूपमें कामरूपिणी (तथा निखिल ब्रह्माण्ड)-की बीजरूपिणी देवी! तुम्हें नमस्कार है। चामुण्डाके रूपमें चण्डविनाशिनी और 'यैकार' के रूपमें तुम वर देनेवाली हो ॥ ४ ॥ 'विच्चे' रूपमें तुम नित्य ही अभय देती हो। (इस प्रकार 'ऐं हीं कलीं चामुण्डायै विच्चे') तुम इस मन्त्रका स्वरूप हो ॥ ५ ॥ 'धां धीं धूं' के रूपमें धूर्जटी (शिव)-की तुम पत्नी हो। 'वां वीं वूं' के रूपमें तुम वाणीकी अधीश्वरी हो। 'क्रां क्रीं कूं' के रूपमें कालिकादेवी, 'शां शीं शूं' के रूपमें मेरा कल्याण करो ॥ ६ ॥ 'हुं हुं हुंकार' स्वरूपिणी, 'जं जं जं' जम्भनादिनी,

भ्रां भ्रीं भ्रुं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥ ७ ॥
 अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं एं वीं हं क्षं
 धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥
 पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खुं खेचरी तथा ॥ ८ ॥
 सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥
 इदं तु कुञ्जकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे ।
 अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥
 यस्तु कुञ्जकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
 न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥

इति श्रीद्रवामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे
 कुञ्जकास्तोत्रं सम्पूर्णम् । *

॥ ॐ तत्सत् ॥